

अतिरिक्त ताहसिलदार और ए. एन. आर. बनाम

यू. आर. एम. आई. एल. ए जी. और ओ. आर. एस.

(2023 की सिविल अपील संख्या (एस) 7938) 30 नवंबर, 2023

[विक्रम नाथ और राजेश बिंदल, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: क्या लोक आयुक्त के पास राजस्व अभिलेखों में सुधार के लिए सकारात्मक निर्देश जारी करने का अधिकार क्षेत्र है।

केरल लोक आयुक्त अधिनियम, **1999** -धारा **12**-लोक आयुक्त की रिपोर्ट-लोकायुक्ता की अधिकारिता-राजस्व अभिलेखों के सुधार के लिए उप-लोकायुक्ता द्वारा निर्देश-स्थिरता

आयोजित किया गया: धारा 12 में यह प्रावधान है कि यदि लोकायुक्ता या उप-लोकायुक्ता को पक्ष की किसी कार्रवाई या निष्क्रियता से संतुष्ट किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप शिकायतकर्ता को अन्याय या अनुचित कठिनाई हुई है, तो वह लिखित रूप में एक रिपोर्ट द्वारा ऐसे अन्याय या कठिनाई को दूर करने के लिए सक्षम प्राधिकारी को सिफारिश करेगी-तथ्यों पर, रिट याचिका उप-लोकायुक्ता के एक आदेश के खिलाफ अतिरिक्त तहसीलदार के नेतृत्व में दायर की गई थी, जिसमें शिकायतकर्ता की संपत्ति के राजस्व रिकॉर्ड में सुधार का निर्देश दिया गया था-उप-लोकायुक्ता द्वारा राजस्व रिकॉर्ड में सुधार के लिए जारी किया गया निर्देश, जिसे उच्च न्यायालय द्वारा बरकरार रखा गया था, पूरी तरह से लोकायुक्ता के अधिकार क्षेत्र से बाहर जाता है-यह दिखाने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि शिकायतकर्ता ने संचार के खिलाफ किसी भी उचित उपाय का लाभ उठाया था, जिसमें सुधार के लिए अनुरोध किया गया था।[पैरा 11-13]

शहरों और
अन्य संदर्भों
की सूची

सुधा देवी के. वी. जिला कलेक्टर 2017 एस. सी. सी. ऑनलाइन केर 1264; जिला कलेक्टर और एक अन्य बनाम पंजीयक, केरल लोकायुक्ता, विधायी

कॉम्प्लेक्स और अन्य ए. आई. आर 2023 केर 97-अनुमोदित।

1090 1091

अतिरिक्त ताहसिलदार और ए. एन. आर. बनाम यू. आर. एम. आई. एल. ए जी. और ओ. आर. एस.
अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

सिविल अपील न्यायनिर्णय:2023 की सिविल अपील सं. 7938/2016 के डब्ल्यूपी (सी) No.39299 में एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय के दिनांकित 10.10.2022 के निर्णय और आदेश से।

रूप:

हर्षद वी. हमीद, दिलीप पूलाक्कोट, सुभाष चंद्रन के. आर., श्रीमती एशली हर्षद, डॉ. प्रह्लाद नारायण सिंह, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।

सर्वोच्च
न्यायालय का
निर्णय/आदेश

न्याय

राजेश बिंदल, जे।

छुट्टी दे दी गई।

2. सेवा के बावजूद, कोई भी उत्तरदाताओं की ओर से उपस्थित नहीं हुआ था।

3. अपीलकर्ताओं ने उच्च न्यायालय 2 द्वारा पारित आदेश 1 को चुनौती दी है, जिसके तहत प्रतिवादी संख्या 1 के नेतृत्व में शिकायत संख्या 6 में उप लोकायुक्ता 5 द्वारा पारित आदेश 4 के खिलाफ रिट याचिका 3 को खारिज कर दिया गया था। 4. संक्षेप में तथ्य, जैसा कि अभिलेख पर उपलब्ध है, यह है कि प्रत्यर्थी संख्या 1 ने भूमि से संबंधित राजस्व रिकॉर्ड के लंबे इतिहास का वर्णन करते हुए लोकायुक्ता के समक्ष एक शिकायत का नेतृत्व किया जिसमें शिकायत की गई थी कि राजस्व रिकॉर्ड को ठीक नहीं किया जा रहा है और इसमें उत्तरदाताओं को सुधार के लिए निर्देश जारी किया जाए और साथ ही स्वर्गीय के. गोपालकृष्णन नायर के कानूनी उत्तराधिकारियों के नाम पर विचाराधीन भूमि को परिवर्तित करने के लिए भी। (1) जी. उर्मिला, (2) जी. उषाकुमारी और (3) जी. कृष्णकुमार। उप लोकायुक्ता ने दिनांक 1 के गुप्त आदेश के माध्यम से तहसीलदार, वर्कला को राजस्व रिकॉर्ड में गलती को सुधारने और शिकायतकर्ता से कर प्राप्त करने का निर्देश दिया। आदेश यह था कि

1 दिनांकित आदेश 10.10.2022।

2 एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय 3 2016 की रिट याचिका (सी) संख्या 39299 4 आदेश दिनांक 18.10.2016

5 केरल उप लोकायुक्ता

6 2016 की शिकायत संख्या 866

1092

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

एक महीने के भीतर सकारात्मक रूप से अनुपालन किया जाना था और इस तरह के अनुपालन की सूचना 16.11.2016 पर दी जानी थी। आदेश के खिलाफ पीड़ित, अपीलकर्ताओं ने उच्च न्यायालय में रिट याचिका का नेतृत्व किया, जिसे खारिज कर दिया गया।

5. अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि उप-लोकायुक्ता द्वारा पारित आदेश पूरी तरह से अधिकार क्षेत्र के बिना था, जबकि इसने राजस्व रिकॉर्ड में सुधार और कर प्राप्त करने के लिए सकारात्मक निर्देश जारी किए, जिसके लिए 1961 के अधिनियम 7 और 1964 के नियम 8 के तहत वैधानिक अधिकारियों को निर्धारित किया गया है। लोकायुक्ता उपरोक्त कानूनों के तहत पदानुक्रम में वैधानिक प्राधिकरणों से ऊपर एक पर्यवेक्षी निकाय नहीं है। लोकायुक्ता को दिया गया अधिकार क्षेत्र केवल कुप्रशासन के मुद्दे को संबोधित करने के लिए था, हालांकि, आदेश में उस मुद्दे को संबोधित किए बिना, उसने गुण-दोष के आधार पर मामले से निपटने के लिए अपने अधिकार क्षेत्र से परे यात्रा की और राजस्व रिकॉर्ड में सुधार के लिए सकारात्मक निर्देश जारी किए, इसलिए उच्च न्यायालय के साथ-साथ उप लोकायुक्ता द्वारा पारित आदेशों को दरकिनार किया जाना चाहिए। 6. पेपर बुक के अवलोकन से पता चलता है कि सेवा के बावजूद, उत्तरदाता 18.08.2023 पर प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे थे और यह भी कि जब मामले की सुनवाई पूरी तरह से की गई थी और 31.10.2023 पर आदेश सुरक्षित रखा गया था।

7. 1999 के अधिनियम की धारा 12 लोकायुक्ता की रिपोर्टों से संबंधित है। इसमें प्रावधान है कि यदि लोकायुक्ता या उप-लोकायुक्ता को पक्ष की किसी कार्रवाई या निष्क्रियता से संतुष्ट किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप शिकायतकर्ता के साथ अन्याय या अनुचित कठिनाई हुई है, तो वह लिखित रूप में एक रिपोर्ट द्वारा ऐसे अन्याय या कठिनाई को दूर करने के लिए सक्षम प्राधिकारी को सिफारिश करेगा।

8. अभिलेख पर उपलब्ध तथ्यों और शिकायत के अवलोकन से, जो लोकायुक्ता के समक्ष प्रतिवादी संख्या 1 के नेतृत्व में की गई थी, यह स्पष्ट है कि उठाई गई शिकायत सर्वेक्षण संख्या 584 (धारा संख्या 584 में पुनः सर्वेक्षण) में संपत्ति के राजस्व रिकॉर्ड में त्रुटि के सुधार के संबंध में थी। बी. एल.-102/03) और के. गोपालकृष्णन नायर के कानूनी उत्तराधिकारियों के नाम पर भी इसे परिवर्तित करना। (1) जी. उर्मिला, (2) जी. उषाकुमारी और (3) जी. कृष्णकुमार। यह अनुरोध किया गया था कि शिकायत में गलती को सुधारने में प्रतिवादियों की ओर से निष्क्रियता कुप्रशासन के बराबर है जिसकी जांच लोकायुक्ता द्वारा की जानी चाहिए। यह शिकायत जून 2016 में दर्ज की गई थी। राजस्व अभिलेखों में त्रुटियों की ओर इशारा करते हुए भूमि से संबंधित लंबा इतिहास दिया गया था। शिकायत भी

7 केरल सर्वेक्षण और सीमा अधिनियम, 1961 8 केरल सर्वेक्षण और सीमा नियम, 1964 1093

अतिरिक्त ताहसिलदार और ए. एन. आर. बनाम यू. आर. एम. आई. एल. ए जी. और ओ. आर. एस.

उल्लेख किया कि राजस्व अभिलेखों में दोष को सुधारने के लिए प्रत्यर्थी संख्या 1 के अनुरोध को अतिरिक्त तहसीलदार ने दिनांक 19.04.2016 के आदेश के माध्यम से अस्वीकार कर दिया था। हालाँकि, उपरोक्त संचार को चुनौती देने के लिए प्रतिवादी संख्या 1 द्वारा आगे कोई कार्रवाई की गई थी या नहीं, इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया था। लोकायुक्ता के समक्ष की गई उपरोक्त शिकायत में प्रासंगिक दावा नीचे दिया गया है: “1. स्वर्गीय के. गोपालकृष्णन नायर के स्वामित्व और स्वामित्व वाली वर्कला की संपत्ति के सर्वेक्षण में राजस्व रिकॉर्ड में त्रुटि को सुधारने के लिए उत्तरदाताओं को निर्देश दिया जा सकता है।

2. चतुर्थ उत्तरदाता को एस. आई. में उपर्युक्त संपत्ति को परिवर्तित करने का निर्देश दिया जा सकता है। No.584 (सी में पुनः सर्वेक्षण किया गया। No.BL-102/03) स्वर्गीय के. गोपालकृष्णन नायर के कानूनी उत्तराधिकारियों के नाम पर। (1) जी. उर्मिला, (2) जी. उषाकुमारी और (3) जी. कृष्णकुमार।”

9. जहाँ तक लोकायुक्ता की अधिकारिता का संबंध है, सुधा देवी के. वी. मामले में उच्च न्यायालय की एक खंड पीठ। जिला कलेक्टर 9 ने राय दी थी कि 1999 के अधिनियम 10 की धारा 12 (1) के संदर्भ में, लोक आयुक्त सकारात्मक निर्देश जारी करने में सक्षम नहीं थे। वह केवल संबंधित प्राधिकारी को उसकी सिफारिशों के साथ एक रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकता है। उनके पास केवल सिफारिश करने का अधिकार क्षेत्र है। एक लोकायुक्ता या उप-लोकायुक्ता विभिन्न कानूनों के तहत बनाए गए अन्य सक्षम मंचों पर अपीलीय या पर्यवेक्षी प्राधिकरण नहीं है, क्योंकि उन मूर्तियों में से प्रत्येक अपील, संशोधन आदि जैसे अपने स्वयं के उपचारात्मक कदम प्रदान करता है। पक्षों को उस प्रक्रिया का पालन करने की आवश्यकता है। 1999 के अधिनियम का उद्देश्य उन प्रक्रियाओं को खत्म करना नहीं है। उच्च न्यायालय की खंड पीठ के उपरोक्त फैसले को हाथ में लिए गए मामले में संदर्भित किया गया था, हालाँकि, इसे नजरअंदाज कर दिया गया था।

10. जिला कलेक्टर और एक अन्य बनाम में एक बाद के फैसले में।

कुलसचिव, केरल लोकायुक्ता, विधायी परिसर और अन्य 11, प्रभाग

उच्च न्यायालय की पीठ ने सुधा देवी के. मामले (उपरोक्त) में निर्धारित कानून को दोहराया। यह राय दी गई कि शिकायतकर्ताओं ने राजस्व अभिलेख में गलतियों को सुधारने के संबंध में वैधानिक उपायों का लाभ नहीं उठाया था। जब कोई प्रासंगिक कानून उपचारों के पदानुक्रम का प्रावधान करता है, तो उनका सहारा लिया जाना चाहिए था। लोकायुक्ता की कार्रवाई को अधिकार क्षेत्र से बाहर पाया गया।

9 2017 एस. सी. सी. ऑनलाइन केर 1264 10 लोक आयुक्त अधिनियम, 1999 11 ए. आई. आर. 2023 केर 97

1094

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

11. हमारे विचार में, उच्च न्यायालय के उपरोक्त दो निर्णयों में, 1999 के अधिनियम के प्रावधानों की सही व्याख्या की गई थी। हालांकि, हाथ में मामले में, राजस्व रिकॉर्ड के सुधार के लिए उप-लोकायुक्ता द्वारा जारी निर्देश को बरकरार रखा गया था, जो पूरी तरह से लोकायुक्ता के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। उप लोकायुक्ता द्वारा अपने संक्षिप्त आदेश में दिया गया निर्देश नीचे दिया गया है:

“3. इन परिस्थितियों में, मैं श्रीमती को निर्देश देता हूँ। साजीता बेगम तहसीलदार, वर्कला, जिनके पास अतिरिक्त तहसीलदार का पूरा अतिरिक्त प्रभार है, वे पुनः सर्वेक्षण अभिलेखों में गलती को सुधारने के लिए और संबंधित ग्राम अधिकारी को निर्देश देते हैं कि वे शिकायतकर्ता से शेष 1.11 एकड़ संपत्ति के लिए कर प्राप्त करें, जो 2010 से 16 की अवधि के लिए 5.18 सेंट के बराबर है, जो कि शिकायतकर्ता द्वारा संपत्ति के एक हिस्से के लिए पहले से ही Ext.P5 के तहत भुगतान किया गया है और राजस्व अभिलेखों में आवश्यक सुधार करने के लिए भी, जो पुरानी एस. आई. में शामिल संपत्ति के 3.35 एकड़ के अनुरूप 8.274 सेंट की उक्त कुल सीमा को दर्शाता है। सं. 584 में शिकायतकर्ता के पूर्ववर्ती के साथ होने के रूप में इसका शीर्षक दिखाया गया है। राजस्व अधिकारियों द्वारा की गई गलती को सुधारने के लिए ब्लॉक संख्या 102 का नंबर 3। यह एक महीने में सकारात्मक रूप से किया जाएगा। पालन करें और 16.11.2016 पर रिपोर्ट करें।”

12. यह दिखाने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि प्रतिवादी नहीं। 1 या तो उस दिनांकित सूचना के विरुद्ध किसी उपयुक्त उपाय का लाभ उठाया था जिसके द्वारा अभिलेख के सुधार के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया था या उसके सुधार के लिए कोई अन्य उचित उपाय किया गया था।

13. ऊपर वर्णित कारणों से, हमारे विचार में उच्च न्यायालय के साथ-साथ उप-लोकायुक्ता द्वारा पारित आदेश को कानूनी रूप से कायम नहीं रखा जा सकता है। उसी के अनुसार अलग रखा जाता है। उत्तरदाता नं. 1, यदि इस प्रकार की सलाह दी जाती है, तो राजस्व अभिलेखों के सुधार के लिए संबंधित कानून के तहत किसी भी उचित उपाय का लाभ उठा सकते हैं।

14. तदनुसार अपील की अनुमति दी जाती है। लागत के बारे में कोई आदेश नहीं होगा।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपील की अनुमति दी गई।

निधि जैन